ભારતનું ગૌરવવંતુ તીર્થ સ્થાન

ચૈતન્ય ધામ

ચૈતન્યની ચેતનાને ચેતનવંતુ રાખવાનું ધામ

।। परिचय ।।

चैतन्यार्थी साधर्मी बन्धुवर !

सादर चैतन्य वन्दन!

कालातीत समय के परम पुनीत शलाका पुरुषों में अन्तिम कुलकर नाभिराय के पौत्र एवं श्री ऋषभदेव के पुत्र भरत चक्रवर्ती के भारत देश का कण-कण पावन था। भगवान श्री महावीर स्वामी, गौतम गणधर एवं भगवत् कुन्दकुन्द देव आदि आचार्यों द्वारा इस धरा को और भी दिव्यध्वनि (तत्त्वज्ञान) द्वारा सींचा गया। ऐसी सुगन्धमय धरा के गुजरात प्रांत में एक और सूर्य के रुप में पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी का उदय हुआ।

इसी सूर्य की दैदीप्यमान आभा से बेतालीस दशा हुम्मड दिगम्बर जैन चोखला पंच मुमुक्षु समाज ट्रस्ट के अन्तर्गत पूज्य श्री कुन्दकुन्द-कहान धर्मरत्न पण्डित श्री बाबुभाई महेता दिगम्बर जैन सत्समागम पब्लिक चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित अध्यात्मसाधना तीर्थ चैतन्यधाम रुपी पुष्प खिला। यह तीर्थधाम न केवल मुमुक्षु समाज की, अपितु जैन धर्मकी यशोगाथा को ओर भी गौरवान्वित करता है।

आनन्द की खलबली मचा देनेवाला चैतन्यधाम का प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 28.11.2008 से 03.12.2008 तक अत्यन्त हर्षोल्लास पूर्वक देश-विदेश से पधारे विद्वानों एवं मुमुक्षु साधर्मीजनों के सहयोग से ऐतिहासिक रुप में सानन्द सम्पन्न हुआ।

Scanned with CamScanner

कार्यालय, विश्राम-गृह और आरोग्य-भवन

संकुल में प्रवेश करते ही सुन्दर चैतन्य-वाटिका में यातायात आवागमन हेतु विशाल पार्किंग है; साथ ही साधर्मी भव्य जीवों को आत्मा की आराधना करने के लिए स्वागत करता हुआ विशाल मुख्य प्रवेशद्वार सुशोभित है, जो कि प्राचीन एवं आधुनिक कला का उत्कृष्ट निदर्शन है।

संकुल के सरल, न्यायिक और तटस्थ संचालन हेतु कार्यालय, साधर्मियों की विश्रान्ति हेतु विश्राम-गृह, निकटवर्ती गाँवों के जरुरतमंद लोगों के शारीरिक रोगों के उपचार हेतु आरोग्य-भवन का निर्माण भी किया गया है।

इन सबके मध्य सीमन्धर स्वामी की दिव्य देशना और श्रीमद् भगवत् कुन्दकुन्दाचार्य देव के पंच परमागमों के रहस्यों को प्रकट करने वाले, युगसृष्टा पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी की धवल पाषाण से निर्मित **101** इंच की प्रतिकृति का दर्शन होता है।

आनंद के सागर में झूलते यह संत मानो यह कह रहे है कि हें भव्यो ! पर-वैभव में तो अनन्तों बार विश्राम किया, रोगी-मलिन शरीर को भी निरोग-सुन्दर बनाने का पुरुषार्थ किया। अब इस चैतन्यधाम में आकर अपने चैतन्यनाथ की प्राप्ति हेतु पुरुषार्थ करो।

स्वाध्याय भवन :- स्वाध्यायःपरमं तपः।

इस पंचमकाल में तीर्थंकरो के विरह को भी जो भुला दे, ऐसी तीर्थंकरों की साक्षात् वाणी, जिनवाणी के स्वाध्याय हेतु श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन का निर्माण किया गया है, जिसका क्षेत्रफल **10,000** वर्गफूट है। इसमें **2000** स्वाध्यायी साधर्मी जिनवाणी का श्रवण-पठन कर सकते हैं। आधुनिक तकनीक से निर्मित हॉल में प्रथमानुयोग के सुन्दर चित्र, रत्न जड़ित जिनवाणी और महान जिनशासन के रहस्य को उद्घाटित करने वाले आचार्यों, महापुरुषों एवं हमारे लिए प्रेरणास्त्रोत विद्वतजनों के चित्र देखकर साधर्मियों के रोम-रोम पुलकित हो जाते हैं। यही स्वाध्याय-भवन की अदभूत शोभा है।

Scanned with CamScanner

जिन मन्दिर :- जिन दर्शन कर निज दर्शन पा...

उक्त पंक्ति को सार्थक करता हुआ, भव्य एवं विशाल 1008 श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमन्दिर है। इसका क्षेत्रफल 8000 वर्गफुट है। सम्पूर्ण भारत में पहली बार पंचधातु से निर्मित पद्मासन श्री महावीर भगवान की 71 इंच की, श्री सीमन्धर भगवान एवं श्री पार्श्वनाथ भगवान की 61 इंच की; इसके साथ ही श्री नेमिनाथ भगवान, श्री शान्तिनाथ भगवान की 65 इंच की एवं 9 इंच की श्री आदिनाथ भगवान और श्री चन्द्रप्रभ भगवान की पद्मासनस्थ जिन प्रतिमाएँ धवल पाषाण से निर्मित विशाल वेदी पर विराजमान है।

मन्दिर में विशाल घुम्मट में रचित काँच की दर्शनीय कला आचार्यो की प्रतिकृति, उनके चरण एवं मोक्षमार्ग का निरुपण करनेवाली जिनवाणी विराजमान है, जो इसकी सुन्दरता की परिचायक है। मन्दिर के ऊपरी भाग में सुन्दर शिल्प-कला से युक्त बंसी पहाड़पुर पत्थर की वेदी पर धवलपाषाण से निर्मित वर्तमान चौबीसी भव्यजीवो के निजदर्शन के निमित्त विराजमान है।

मानो यह जिन-वैभव संकेत कर रहा हो कि-

हे चेतन्यार्थी भव्य जीवो! अहोभाग्य है हम सबका, चैतन्य में चेतन पाने का।

विद्वत-निवास:- न धर्मो धार्मिकै:विना

उपर्युक्त उक्तिनुसार विद्वानों का सतत समागम बना रहे - इस प्रयोजन हेतु उनके आवास के लिए विद्वत्-निवास का निर्माण किया गया है। इसमें आठ कमरें है, जिनका क्षेत्रफल 4000 वर्गफूट है। प्रतिवर्ष आयोजित होनेवाले शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों में धार्मिक शिक्षण हेतू यहाँ चार बडे हाँल है, जिनका क्षेत्रफल 4000 वर्गफूट है।

साधर्मी निवास

चैतन्यार्थी मुमुक्षुओं और देश-विदेश से पधारने वाले साधर्मियों के निवास हेतु 110 कमरें है जिसमे 25 ए.सी. रुम बनाये गये है। आधुनिक सुख-सुविधाओं को त्याग कर आये हुए यात्रीगण, प्रकृति की गोद में अध्यात्म-वैभव एवं चैतन्य-वाटिका से सुगन्धित मनोहर वातावरण में शान्ति का अनुभव करते हैं।

Scanned with CamScanner

विशाल भोजनालय

अध्यात्म पिपासुओं की क्षुधा-तृप्ति हेतु शुद्ध, सात्त्विक एवं मर्यादा युक्त भोजन की उपलब्धता हेतु विशाल भोजनालय का निर्माण भी यहाँ किया गया है । इसका क्षेत्रफल 11000 वर्गफूट है, जहाँ एक साथ **500** साधर्मी बैठकर भोजन कर सकते है।

बाहर से पधारे यात्रा-संघ के आवास हेतु दो बड़े भवनों और चार छोटे भवनों का निर्माण किया गया है । भोजनालय के समीप ही एक लाख लीटर क्षमता की पानी की टंकी का भी निर्माण किया गया है, जहाँ से पूरे संकुल में शुद्ध पानी का प्रवाह होता है।

चैतन्य विद्या निकेतन:- ज्ञानं सर्वसमाधान-कारणम् !

"घर-घर शिक्षा घर-घर ज्ञान,
चैतन्य धाम का यह अभियान "

बालकों में धार्मिक संस्कारों के बीजारोपण हेतु, आधुनिक युग में उच्च लौकिक शिक्षा के साथ-साथ जैनधर्म के मूलभूत सिद्धान्तों से उन्हें परिचित कराने हेतु, यहाँ चैतन्य विद्यानिकेतन का शुभारम्भ सन् 2012 में हुआ । यहाँ बालकों को लौकिक शिक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड अंग्रेजी एवं गुजराती माध्यम से दी जाती है।

बालकों के चतुर्मुखी विकास हेतु धार्मिक शिक्षा में- प्रार्थना, अभिषेक, पूजन, स्वाध्याय, भक्ति, तात्त्विक गोष्ठी, भाषण, काव्य -पाठ, वाद-विवाद, कण्ठ-पाठ, निबन्ध, धार्मिक प्रोजेक्ट ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि गतिविधियाँ आयोजित होती हैं तथा लौकिक शिक्षा हेतु स्कूली पाठ्यक्रम के अतिरिक्त योग, कम्प्युटर, संगीत, नृत्य क्रिकेट, इंग्लिश स्पीकिंग इत्यादि का ज्ञान कराया जाता है।

विद्यानिकेतन में छात्रों के लिए अत्याधुनिक छात्रावास, भोजन एवं विद्यालय-आवागमन की सुविधा की व्यवस्था चैतन्यधाम की ओर से निः शुल्क की गई है।

Scanned with CamScanner

चैतन्यविद्या निकेतन की विशेष गतिविधियो में समय-समय पर चैतन्यार्थियो द्वारा समाज में भक्ति- प्रवचनों का आयोजन कर, बालकों एवं युवाओं में धर्म के प्रति रुचि जागृत करने एवं धार्मिक गतिविधियों से जोड़ने हेतु सदैव प्रयत्नशील रहता है।

शुद्धि सदन

श्रावक के षट् आवश्यकों में से एक देवपूजा के अन्तर्गत जिनागमानुसार शुद्धि के प्रकरण को ध्यान में रखते हुए आदर्श शुद्धि सदन का निर्माण किया गया हैं, जहाँ से श्रावकगण स्नानकर, धोती-दुपट्टा पहनकर विशेष शुद्धिपूर्वक प्रतिमा-प्रक्षालन हेतु मन्दिरजी में प्रवेश करते हैं।

श्रुत सदन

अनन्त तीर्थंकर भगवन्तों की वाणी को जीवन्त रखने तथा आत्मकल्याण के निमित्तभूत वर्तमानकाल में भव्य जीवों को धर्म के प्रति उत्साहित करने एवं उनके परिणामों को उज्ज्वल करने के लिए "श्रुत सदन" (जिनवाणी भवन) का निर्माण किया गया हैं, यहाँ बेठकर साधर्मीजन शान्तचित होकर श्रुत का श्रवण, पठन एवं चिन्तन-मनन करके षट् आवश्यको मेसे स्वाध्याय के आवश्यक को सार्थक करते हैं।

हमारे उद्देश्य

- चैतन्य की चेतना को चेतनवन्त रखने के लिए चैतन्य विद्यानिकेतन द्वारा जिनशासन का प्रचार कर एवं निजात्मा की प्रभावना करना।
- सुन्दर चैतन्यधाम के दर्शन करा कर, त्रैकालिक निज चैतन्यधाम के दर्शन कराना।
- भगवान महावीर से लेकर अनेक आचार्यों द्वारा जिस दिव्य देशना का निरुपण किया गया है, उसे यहाँ से प्रसारित करना।
- स्वानुभव साक्षात्कार और वीरशासन को पुनःप्राणवन्त करने वाले आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी द्वारा उद्घाटित तत्त्वज्ञान एवं उनके सी.डी. प्रवचनों का लाभ प्राप्त कराना।

Scanned with CamScanner

- आत्मसाधना हेतु पधारे विद्वान एवं साधर्मी भाई-बहनों के लिए सुन्दर सुविधा प्राप्त कराना।
- अति दुर्लभ मनुष्यभव को कृतार्थ करने वाला यह दिव्य अध्यात्म सदैव जीवन्त रहे और आनेवाली पीढ़ियों द्वारा 18500 वर्षों तक सुरक्षित रह सके- ऐसे संस्कारों को जन्म देना।
- प्रतिवर्ष होनेवाले बाल, युवा, प्रौढ़, सामूहिक, महिला, कपल (युगल), शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन हो सके एवं दशलक्षण, अष्टानिका महापर्व एवं समय-समय पर होनेवाले प्रासंगिक पूजन-विधानों का आयोजन निर्बाध एवं सुचारु रुप सें हो सके और सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बन सके-ऐसी व्यवस्था उपलब्ध कराना।

हमारी भावि योजनाएँ

- चैतन्य विद्यानिकेतन का संचालन 2012 सें निरंतर हो रहा है। यहाँ अध्ययनरत चैतन्यार्थियों द्वारा जैनधर्म का प्रचार-प्रसार विभन्न शिविरों द्वारा कराना।
- आरोग्य-भवन को प्रारंभ कर जरुरतमंद लोगों के शारीरिक रोगों का निःशुल्क उपचार करना।
- मासिक पत्रिका एवं विभिन्न शास्त्रों का प्रकाशन प्रारंभ करना।

चैतन्यधाम पहुँचने का मार्ग

अहमदावाद-हिम्मतनगर-उदयपुर नेशनल हाइवे नं. 48 पर अहमदावाद से 35 कि.मी. और मोटा (बडा़) चिलोड़ा से 7 कि.मी. की दूरी पर तीर्थधाम चैतन्यधाम शान्त वातावरण एवं नयन-रम्य प्रकृति की गोद में बना हुआ है।

अन्य समीपस्थ धार्मिक स्थान

छाला, वस्त्रापुर, उमता, देरोल, भिलोडा, चिन्तामणि पार्श्वनाथ, तारंगाजी, गिरनारजी, सोनगढ़, पालिताना, उमराला, पावागढ़, महुआ आदि।

प्रमुख/मन्त्री
चैतन्यधाम, अहमदाबाद (गुजरात)

Scanned with CamScanner